सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़-14

इस्लाम का संदेश मानवता के नाम

जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, नई दिल्ली-110025

9810032508, 9650022638

www.islamsabkeliye.com

facebook.com/islamsabkeliyeofficial

'अल्लाह कृपाशील, दयावान के नाम से'

इस्लाम का संदेश मानवता के नाम

सम्पूर्ण मानवजाति के लिए ईश्वर की ओर से एक ही धर्म आया जिसका नाम इस्लाम है। यही धर्म पहले ईशदूत हज़रत आदम (अलैहि॰) जो दुनिया के पहले इन्सान थे, पर अवतरित हुआ और यही धर्म सबसे अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰*) पर अवतरित हुआ। इस बीच ईश्वर ने हर ज़माने में और हर जाति में लोगों के मार्गदर्शन के लिए अपने दूत भेजे, वे लोग जो धर्म लेकर आए उसका नाम इस्लाम ही था, मगर उन धर्मों के माननेवालों ने धीरे-धीरे उसमें अपनी बातें शामिल करके उनकी वास्तविकता को विकृत कर दिया और धर्म का नाम भी बदल दिया। इसलिए अल्लाह, ईश्वर ने आख़िर में सारी दुनिया के इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर इस्लाम धर्म का पूर्ण और अन्तिम संस्करण क़ुरआन की शक्ल में अवतरित किया और ईश्वर ने इसी पवित्र क़ुरआन में यह बता दिया कि हम ही इस क़ुरआन के उतारने वाले हैं और हम ही इसकी रक्षा करनेवाले हैं, इसलिए अब रहती दुनिया तक इस ईश्वरीय ग्रंथ में किसी तरह के संशोधन की कोई संभावना नहीं है। यही कारण है कि हम देख रहे हैं कि क़ुरआन को अवतरित हुए 1450 साल गुज़र गए, लेकिन इसके एक अक्षर में भी कोई संशोधन या परिवर्तन नहीं हुआ है। यह बिल्कुल अपनी अस्ली हालत में है। इसलिए अब समस्त मानवजाति के लिए क़ुरआन और अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाएँ ही मान्य और अनुकरणीय हैं और अब इस मूल धर्म का अनुसरण करके ही सफलता और मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

''आज मैंने तुम्हारे दीन (धर्म) को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया है और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया है।'' (क़ुरआन 5:3)

इस्लाम शब्द का अर्थ

'इस्लाम' अरबी भाषा का शब्द है। अरबी भाषा में इस्लाम का अर्थ है शान्ति, आज्ञापालन, अनुसरण, नम्रता और ईश्वर के आगे आत्मसमर्पण करना एवं उसका आज्ञापालन करना।

निःसंदेह क़ुरआन ईश्वरीय ग्रंथ है

क़ुरआन अल्लाह की किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं। इसका एक खुला हुआ प्रमाण यह है कि इसकी शिक्षाओं और व्याख्यानों में कोई विरोधाभास *(Contradiction)* नहीं है अर्थात् इसकी कोई बात इसकी दूसरी बात को काटती नहीं है। हालाँकि इसमें 114 अध्याय और लगभग 6666 आयतें (वाक्यांश) पाई जाती हैं और यह 23 वर्षों की लम्बी अवधि के अन्तराल में अवतरित हुआ है। क़ुरआन में बहुत-सी बातें बयान की गई हैं, मगर ज्ञान और विज्ञान की इतनी तरक़्क़ी के बावजूद आज तक क़ुरआन में वर्णित किसी एक बात को भी ग़लत साबित नहीं किया जा सका है। यद्यपि इन्सानों की लिखी हुई सारी किताबों में कुछ न कुछ ग़लतियाँ और कमियाँ ज़रूर पाई गई हैं और उसमें संशोधन भी होता रहता है। सत्य यह है कि इन्सानों का बनाया हुआ कोई संविधान हो या उसकी लिखी हुई कोई भी किताब हो उसमें कोई न कोई त्रुटि ज़रूर पायी जाएगी। यह ईश्वरीय ग्रंथ ही की विशेषता है कि वह त्रुटिहीन होता है।

क़ुरआन ईश्वरीय ग्रंथ है उसका एक प्रमाण यह भी है कि कोई मनुष्य इस जैसी पुस्तक नहीं लिख सकता। क़ुरआन अरबी भाषा में है और उसकी भाषाशैली अछूती और उसका साहित्यिक स्तर बहुत ऊँचा है और अपने वक्तृत्व शक्ति और भाषायी सौन्दर्य के शिखर पर होने के लिए यह सर्वत्र जानी जाती है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि क़ुरआन में अल्लाह ने स्वयं लोगों को संबोधित करते हुए यह चुनौती दी कि अगर तुम्हें इस बात में कोई शंका है कि यह क़ुरआन हमारी किताब है या नहीं, तो तुम सब मिलकर इस जैसा एक अध्याय ही बनाकर लाओ। इस चुनौती के आगे अरब के बड़े-बड़े भाषाविद् और विद्वानों ने स्वीकार कर लिया कि यह इन्सानी कलाम (वाणी) नहीं है।

''और अगर तुम्हें इस बात में सन्देह है कि यह किताब जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं, तो इस जैसी एक ही सूरा बना लाओ, अपने मत के सारे ही लोगों को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़कर बाक़ी जिस-जिसकी चाहो सहायता ले लो, अगर तुम सच्चे हो तो यह काम करके दिखाओ ।'' (क़ुरआन 2:23)

क़ुरआन इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुआ ईशग्रंथ है, इसमें समस्त मानवजाति को सम्बोधित किया गया है, किसी जाति विशेष, नस्ल, समुदाय, क़ौम और क़बीले के लोगों को सम्बोधित नहीं किया गया है। इसलिए इस्लाम पूरी मानवजाति का धर्म है। अतः हर व्यक्ति को चाहिए कि वह खुले दिल और निष्पक्ष भाव से इस्लाम का अध्ययन करे।

''तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश आ गया है और एक ऐसी स्पष्ट किताब जिसके द्वारा अल्लाह उन लोगों को जो उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं सलामती की राहें बताता है और अपनी अनुमति से उनको अंधेरों से निकालकर उजाले की ओर लाता है और सीधे मार्ग की तरफ़ उनका पथ-प्रदर्शन करता है।'' (क़ुरआन 5:16)

इस्लाम का तर्कसंगत दृष्टिकोण

इस्लाम अंधविश्वास का धर्म नहीं है कि जिस धर्म में तुम पैदा हो गए हो उसे मानो, चाहे उसकी कोई बात तुम्हारी समझ में आती हो या न आती हो, बल्कि इस्लाम यह कहता है कि इसको सोच-समझकर मानो। यह ज्ञान एवं बुद्धि का धर्म है और यह चिंतन पर उभारता है। क़ुरआन कहता है कि ब्रह्माण्ड में फैली हमारी निशानियों पर चिंतन करो तुम्हारे शरीर के अन्दर जो सिस्टम काम कर रहा है तुम उनपर सोचो तो तुम्हारा हृदय इस बात की गवाही देगा कि इसे एक सर्वशक्तिमान ईश्वर ने बनाया है इसलिए वही पूज्य है और उसी की दी हुई जीवन- व्यवस्था पर चलना चाहिए।

''वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों को ऐसे सहारों के बिना क़ायम किया जो तुमको नज़र आते हों, फिर वह अपने राजसिंहासन पर विराजमान हुआ, और उसने सूरज और चांद को एक नियम का पाबन्द बनाया, इस सारी व्यवस्था की हर चीज़ एक निश्चित समय तक के लिए चल रही है और अल्लाह ही इस सारे काम का नियंत्रण कर रहा है। वह निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है शायद कि तुम अपने रब से मिलन का विश्वास करो।''

(क़ुरआन 13:2)

इस्लाम मानव-प्रकृति के अनुकूल

इस्लाम की शिक्षाएँ इन्सान की प्रकृति के अनुकूल हैं। आदिकाल से आज तक जितने इन्सान पैदा हुए हैं वह चाहे दुनिया के जिस भू-भाग में पैदा हुए हों उनकी प्रकृति एक है उनकी ज़रूरतें भी एक हैं, इसलिए उसने इन्सान की प्राकृतिक माँगों के हिसाब से ही उसे जीवन-प्रणाली प्रदान की है। उदाहरणस्वरूप उसे भूख लगती है तो इस्लाम ने कमाने-खाने से नहीं रोका है, लेकिन वह यह प्रतिबंध अवश्य लगाता है कि सही तरीक़े से माल कमाओ और सही तरीक़े से ख़र्च करो, हराम और नाजायज़ माल से अपना पेट न भरो।

''और तुम लोग न तो आपस में एक-दूसरे के माल अवैध रूप से खाओ और न अधिकारी व्यक्तियों के आगे उनको इस ग़रज़ से पेश करो कि तुम्हें दूसरों के माल का कोई हिस्सा जान-बूझकर अन्यायपूर्ण तरीक़े से खाने का अवसर मिल जाए।'' (क़ुरआन 2:188)

इसी तरह से उसकी एक ज़रूरत जिंसी *(Sex desire)* है। इस्लाम ब्रह्मचर्य का दृढ़ विरोधी है और हर वयस्क मर्द और औरत को शादी करने के लिए प्रेरित करता है। वह केवल इतनी बात कहता है कि जिंसी ज़रूरत *(Sex desire)* पूरी करने के लिए *Free Sex* तुम्हारे लिए जायज़ नहीं।

इस्लाम एक पूर्ण जीवन-व्यवस्था है

इस्लाम ईश्वर के द्वारा प्रदान की गई एक पूर्ण जीवन-व्यवस्था है। यह जीवन के हर क्षेत्र के लिए विस्तारपूर्वक शिक्षा प्रदान करता है, चाहे वह व्यक्तिगत जीवन हो या सार्वजनिक जीवन हो, राजनैतिक, आर्थिक या सामाजिक। इस्लाम मुक्ति के लिए मनुष्य को अपने परिवार और समाज से कटकर गुफ़ाओं व पहाड़ों में रहने की बात नहीं करता, बल्कि समाज में रहकर ही अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने और समाज-सुधार पर उभारता है।

इन्सानों की दासता से मुक्ति

इस्लाम की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह एक ईश्वर की दासता और आज्ञापालन में इन्सान को दाख़िल

करके हर तरह की दासता से मुक्त कर देता है। जो एक ईश्वर का आज्ञाकारी हो गया उसे अपनी मुक्ति और सफलता के लिए किसी और के आगे सिर झुकाने की ज़रूरत नहीं और न ही समाज के बंधनों में जकड़े रहने की ज़रूरत है। इस्लाम इन सब ज़ंजीरों को काट देता है और इन्सान को सच्ची आज़ादी देता है।

समानता

इस्लाम यह मानता है कि दुनिया के सारे लोग एक इन्सान की संतान हैं इसलिए वे सब आपस में भाई-भाई हैं चाहे वे जिस रंग-रूप और नस्ल के हों, जिस देश में रहते हों और जो भी भाषा बोलते हों। इसमें न कोई छोटा है, न कोई बड़ा, न कोई ऊँच है न कोई नीच, न कोई अछूत। ईश्वर की दृष्टि में बड़ा अगर कोई है, तो वह जो ईश्वर से सबसे ज़्यादा डरता हो और ईश्वर का सबसे ज़्यादा आज्ञाकारी हो।

''लोगो, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियाँ बना दीं ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार है।'' (क़ुरआन 49:13)

आख़िरी हज के अवसर पर ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने घोषणा की—''लोगो! तुम सबका रब भी एक है और बाप भी एक है, तुम सब आदम की औलाद हो, और आदम मिट्टी से बने थे। इसलिए किसी अरब को ग़ैर-अरब पर बड़ाई नहीं, न गोरे को काले पर, बड़ाई केवल ईशपरायणता के आधार पर है।''

शिष्टाचार की सर्वोत्तम शिक्षा

मनुष्य शरीर और आत्मा का संकलन है, परन्तु वास्तविकता यह है कि अस्ल इन्सान आत्मा में ही बसता है। यद्यपि शरीर की महत्ता भी मुसल्लम (सर्वमान्य) है और इस्लाम ने शरीर की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े सुंदर सिद्धांत दिए हैं, मगर आत्मा की तरक़्क़ी ही से इन्सान के अन्दर इन्सानियत व मानवता पैदा होती है, इसलिए इस्लाम ने शिष्टाचार की शिक्षा पर बहुत ज़्यादा

बल दिया है। इन्सान को इन्सान बनाने वाली नैतिक शिक्षाएँ क़ुरआन से ज़्यादा अच्छी कहीं नहीं मिलतीं। ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का कथन है कि मैं शिष्टाचार के गुणों और विशेषताओं को पराकाष्टा पर पहुँचाने आया हूँ यह इसलिए कि इन्सान अन्दर से बदल जाए और उसमें नेकियों पर चलने की प्रवृत्ति व रुचि पैदा हो जाए।

क़ानून और नैतिक सुधार

इसमें शक नहीं कि इस्लाम के दीवानी और फ़ौजदारी क़ानून, *(Civil and Criminal Laws)* कठोर हैं और दुनिया के लोग उन पर आपत्तियाँ जताते हैं और वह उनको सख़्ती से लागू भी करता है, मगर यह सब तब करता है, जब वह इन्सान के नैतिक सुधार का पूरा प्रयत्न व प्रबन्ध कर लेता है।

संतुलित जीवन-व्यवस्था

इस्लाम एक संतुलित जीवन-व्यवस्था है यह दीन और दुनिया के विभाजन को नहीं मानता है। इस धर्म की जो शिक्षाएँ हैं उनमें यह संतुलन है कि ईश्वर का जो अधिकार है वह ईश्वर को दिया जाए और जो बन्दों का अधिकार है उन्हें भी अवश्य पूरा किया जाए। ईश्वर का अधिकार यह है कि उसकी इबादत व उपासना की जाए और हर तरह के शिर्क से बचा जाए। इस्लाम ने अपने अनुयायियों पर दिन में पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ *(Obligatory)* की है। साल में एक महीना उपवास (रोज़ा) रखने की शिक्षा दी है और अगर उसकी आर्थिक और शारीरिक स्थिति अनुमति देती हो तो जीवन में एक बार मक्का जाकर हज करने को अनिवार्य किया है। इसी के साथ साल भर में एक ख़ास स्तर से अधिक धन होने पर उसमें से ढाई प्रतिशत ज़कात (दान) ग़रीबों के लिए देना अनिवार्य है।

बन्दों का अधिकार यह है कि अपनी बीवी, बाल-बच्चों, अपने माँ-बाप, अपने परिवार, रिश्तेदारों, अपने पड़ोसियों और समाज में रहनेवाले लोगों के प्रति उन पर जो नैतिक और आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ लागू होती हैं, वह उन्हें पूरा करें और उनके साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करें। इस्लाम की नज़र में वही इन्सान अच्छा है, जिसका

व्यवहार सबसे ज़्यादा अच्छा है।

औरत का सम्मान

इतिहास साक्षी है कि स्त्री हर ज़माने में मर्दों के अत्याचार का शिकार रही है और उसके अधिकारों को बुरी तरह कुचला गया है, इस्लाम ने सबसे पहले औरत के अधिकारों की पूरी तरह रक्षा की और उसे मान-सम्मान के साथ ज़िन्दा रहने का हक़ दिया। आज से 1450 वर्ष पूर्व जो कुछ इस्लाम ने औरत को अधिकार दे दिया है, वह आज की आधुनिक दुनिया नहीं दे सकी है। इस्लाम ने औरत की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिए कुछ प्रतिबंध अवश्य लगाए हैं, लेकिन ये प्रतिबंध औरत की उन्नति में कोई अड़चन और बाधक नहीं हैं।

इस्लाम में क्षमा

इस्लाम की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि इस्लाम बड़े से बड़े पापी और गुनाहगार आदमी को भी निराश नहीं करता। अल्लाह बहुत दयावान और कृपाशील और अपने बन्दों के गुनाहों को माफ़ करनेवाला है। इन्सान से भूल-चूक, पाप और ग़लतियाँ होंगी, लेकिन अगर वह सच्चे मन से तौबा (प्रायश्चित) कर ले और अल्लाह से माफ़ी मांगे तो वह हर वक़्त माफ़ करने को तैयार है। इस्लाम में अल्लाह के माफ़ करने की धारणा बड़े से बड़े अपराधियों के लिए बहुत बड़ी आशा की किरण और उनके लिए सुधार का द्वार खुला रखता है।

''वही है जो अपने बन्दों से तौबा क़बूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है, हालाँकि तुम लोगों के सब कर्मों का उसे ज्ञान है।''

(क़ुरआन 42:25)

''(ऐ नबी) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो जाओ, यक़ीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है, वह तो अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।'' (क़ुरआन 39:53)

***(सल्ल॰) : सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो।**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
dawah.jih@gmail.com